वाद संवाद

शोध विषयक त्रैमासिक

अंक-6
अप्रैल-जून, 2015
आई एस. एस. एन. : **2348 – 8662**

स्वाक्षर

नई दिल्ली (भारत)

वाद संवाद अंक - 6
आई एस. एस. एन. : **2348 – 8662** अप्रैल-जून, 2015
त्रैमासिक

प्रधान संपादक
डॉ. राम रतन प्रसाद
सहायक प्रोफेसर - हिन्दी विभाग
ए. आर. एस. डी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रबंध संपादक
डॉ. अनिल कुमार सिंह
सहायक प्रोफेसर - हिन्दी विभाग
पी.जी. डी. ए. वी. कॉलेज, (सांध्य) दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक
डॉ. अनिल कुमार
सहायक प्रोफेसर - हिन्दी विभाग
ए. आर. एस. डी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

सहायक संपादक
डॉ. फरमान अली
हिन्दी आलोचक, राजस्थान

वित्त सहयोग
अंजली कुमारी

उप संपादक
डॉ. सुधांशु कुमार
सहायक प्रोफेसर- हिन्दी विभाग
स्वामी श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

सम्पादकीय एवं परामर्श मण्डल

सत्यनारायण मंडल, स्वास्थ्य प्रशिक्षक, बिहार
डॉ. हेमराज मीणा, प्रोफ़ेसर, हिंदी भाषा और साहित्य, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी
डॉ. शंकर नाथ तिवारी, सहायक प्रोफेसर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा
रामरूप मीणा, सहायक प्रोफेसर, श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
करबी देवी, सहकारी अध्यापिका, हिन्दी विभाग, नगाँव महाविद्यालय, नगाँव, असम
डॉ. विष्णु कुमार राय, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी प्रचार सभा, अरूणाकुलम, केरल
बृजेश कुमार, शोधार्थी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
संजीव कुमार झा, शोधार्थी, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

प्रकाशक, मुद्रक एवं वितरक
स्वाक्षर
103, मनोकामना भवन, गली नं-2 कैलाशपुरी
पालम, नई दिल्ली - 110045 भारत
दूरभाष : +09871423939
ई-मेल : vaadsamvaad@gmail.com

इस पत्रिका में व्यक्त लेख एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं तथा आवश्यक नहीं कि यह विचार अनिवार्य रूप से प्रमाणित पत्रिका की नीतियों के द्योतक हों। इसमें संपादक एवं प्रकाशक की सहमति/प्रमाणिकता आवश्यक नहीं है।

ISSN : **2348 – 8662**

12.	**भारतीय समाज में नारी चेतना** – जसपाली चौहान	85
13.	**संस्कृत, संस्कृति और संस्कार** – समीर कुमार मिश्र	91
14.	**राग दरबारी में सामाजिक-राजनीतिक मोहभंग** – अल्का मणि	96
15.	**नारी विमर्श और भारतीय समाज** – अंजलि कायस्था	101
16.	**गीत के ध्रुवांतों के बीच हिन्दी सिनेमा** – प्रियंका सिंह	105
17.	**जयशंकर प्रसाद की 'अकाशदीप' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों के विविध रूप** – डॉ. अनिता कुमारी	110
18.	**नेहरू अंबेडकर तथा राष्ट्रवाद का चिंतन** – अर्धेंदु	116
19.	**'राष्ट्र' की अवधारणा और हिंदी भाषा** – शालिनी त्रिपाठी	121
20.	**भाषा के सामाजिक संदर्भ** – ममता चावला	125
21.	**स्वाधीनता आंदोलन में वीरांगनाओं की भूमिका** – डॉ. रजिंदर कौर	131
गज़ल-खण्ड		**136–142**
	– सुषमा चौरसिया	
कविता-खण्ड		**143–145**
	– स्वाति परमार	138
	– योगेश शर्मा 'योगी'	140

भाषा के सामाजिक संदर्भ

– डॉ ममता चावला

भाषा मनुष्य-जीवन की अमूल्य निधि है। इसका प्रसार एक व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व तक है।मनुष्य ने अपने सृजन से ही अपने को अभिव्यक्त करने के लिए, विभिन्न प्रकार की माध्यमों की खोज की है। जिसके द्वारा वे अपने भावों और विचारों को दूसरों तक पहुंचा सके। उसके द्वारा किए गए विभिन्न प्रयत्न एवं कोशिशें ही श्मानव भाषाश के रूप में फलीभूत हुई हैं। वैसे तो मनुष्य गंध-इंद्रियों, स्वाद इंद्रियो, स्पर्श इंद्रियों, दृग इंद्रियों तथा कर्ण इंद्रियों के माध्यम से भी अपनी बात कह सकता है। अगर हम इस दृष्टि से देखें तो अपने भावों को व्यक्त करने के लिए हाथों- पैरों का संचालन, स्वीकृति-अस्वीकृति के लिए सिर का हिला देना, रेलवे चालक का झंडी दिखा देना, ताली बजाना, मेज पर हाथ पटकना आदि अनेक अभिव्यक्तियों का प्रयोग इन्हीं श्रेणी में आ सकता है। बिहारी के नायक-नायिका तो भरे भवन में केवल नेत्रों से ही अपनी बात करने में कुशल थे।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु ही सब बात।।[1]

लेकिन, "जब हम भाषा की बात करते हैं तो हम उन सभी साधनों को नहीं लेते जिसके द्वारा विचारों को व्यक्त करते हैं और ना ही उसे लिया जाता है जिसके द्वारा हम सोचते हैं।भाषा उसे कहते हैं जो बोली और सुनी जाती है और बोलना भी पशु- पक्षियों का नहीं, गूंगे मनुष्यों का नहीं, केवल बोल सकने वाले मनुष्य का।[2]

भाषा शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की भाष् धातु से हुई है। यह धातु व्यक्त वाणी के अर्थ में प्रयुक्त होती है। इस प्रकार भाषा का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ हुआ -व्यक्त वाणी में कुछ बोलना। पतंजलि ने भाषा के संबंध में लिखा है-

"भाष्यते व्यक्तवागरूपेण अभिव्यज्यते इति भाषा"[3]

अर्थात जो वाणी में वर्णों के माध्यम से व्यक्त होते हैं वही व्यक्त वाक् भाषा है। अर्थवता इसका गुण है।

• एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, माता सुंदरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय